॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य-प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक पत्र)

वर्ष-3, अंक-4, मास दिसम्बर 2023 विक्रमी संवत् 2080 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123

कुल पृष्ठ 8 एक प्रति 5 रूपये वार्षिक शुल्क 50/- रूपये आजीवन 500/- रूपये

सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री www.aryasamajrajandernagar.org दूरभाष:- 011-40224701

मानवता का पुजारी–स्वामी श्रद्धानन्द

❑ सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

स्वामी श्रद्धानन्द का परिचय आर्यजगत् को सम्वत् 1936 में स्वामी दयानन्द सरस्वती के बरेली प्रवास में तत्कालीन आंग्ल–संस्कृति में रचे–बसे व्यसनी, तर्कशील, नास्तिक युवक मुंशीराम के रूप में मिलता है, जिसने पिता श्री नानकचन्द द्वारा संस्कृतज्ञ पूज्य संन्यासी स्वामी दयानन्द का परिचय मिलने पर सोचा था कि एक संस्कृत जाननेवाला संन्यासी बुद्धि की क्या बात करता होगा? किन्तु न जाने पूर्व जन्मों के संस्कारों की क्या प्रेरणा रही होगी कि पिता की बात मानकर उसके मन में निश्चय किया कि पिता ने बड़े अपनत्व से कहा है, तो मैं एक बार जाकर देखूँगा। अगले प्रवचन में मुंशीराम पहुँचता है, तथा क्या देखता है कि सभा के पण्डाल में पहली पंक्ति में अंग्रेज तथा मुस्लिम विद्वान् बैठे हैं। यह दृश्य देखकर युवक में संन्यासी के प्रति घृणा कम हुई। दूसरी श्रद्धा स्वामी जी के दर्शन करके उनके व्यक्तित्त्व को देखकर बढ़ी। उस दिन स्वामी जी का व्याख्यान धर्म विषय पर था, जिसमें स्वामी जी ने धर्म के साथ–साथ धार्मिकता की व्याख्या की। तर्कशील मुंशीराम के मन में प्रश्न आया कि ये साधु जो कुछ भी बोल रहा है, क्या वह स्वयं भी उस पर अमल करता है, अथवा 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' वाली कहावत को सिद्ध करेगा; मैं इसकी जीवन–शैली देखूँगा। आगे चलकर अपनी आत्मकथा में युवक मुंशीराम इसी घटना को उद्धृत कर लिखते हैं कि उनके वचनो की सत्यता को परखने के लिए में रात को मन्दिर में ही रुका तथा जाराकर प्रातः उनके जागने की प्रतीक्षा करने लगा। लगभग 3 बजे वे उठे और नित्यकर्म हेतु चले गये। उनकी सामान्य चाल भी मुझ जैसे युवक को मात दे गयी और में पीछे रह गया। आगे मार्ग दो भागों में बंट जाता है, वे कहाँ गये, पता नहीं चला। अगले दिन रात में मैं उसी स्थान पर चला गया कि यहाँ से स्वामी जी का पीछा करूँगा। मैंने देखा कि स्वामी जी लगभग 3 मील चलकर एक वृक्ष के नीचे बैठकर लगभग एक घण्टाभर ध्यान लगाया। ये मैंने उनकी कथनी–करनी को एक पाया और में उनसे मन से जुड़ गया। एक दिन मैंने उनसे विभिन्न विषयों पर अपनी शङ्कायें कीं। उन्होंने समाधान कर दिया। मैंने कहा– 'स्वामी जी! आपने मेरी शङ्काओं का समाधान तो कर दिया, किन्तु मेरे अन्दर में विश्वास कब पैदा होगा, यह निश्चय कराइये?' स्वामी जी ने कहा 'युवक यह सब तो युक्ति की बातें हैं। तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दिये। रही तुम्हारे परमात्मा पर विश्वास की, तो वह भी होगा। किन्तु कब होगा? यह होगा, जब ईश्वर की कृपा तुम पर होगी।' यहाँ से मुंशीराम जी के जीवन में नास्तिकता की समाप्ति व आस्तिकता का अंकुर उत्पन्न होना प्रारम्भ हुआ और वे स्वामी जी के कार्यक्रमों में रूचि लेने लगे। और इतनी रुचि बढ़ी कि उन्होंने इन्हें अपने जीवन में धारण कर, लक्ष्य ही बना लिया। अपने जीवन के सारे व्यसन प्रयत्न से दूर किये तथा प्रभुकृपा से तथा पूर्वजन्मों के संस्कारों के उदय से वे स्वामी जी के सभी कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग लेने लगे। स्वामी जी के निर्वाण के पश्चात् जब पं गुरुदत्त विद्यार्थी ने स्वामी जी के सपनों का गुरुकुल खोलने हेतु योजना बनाकर दिन माँगा। और जब उस दिन को चालाकी से लेकर तत्कालीन आर्यसमाजियों ने 'दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल' की नींव डाली, तो पं. गुरुदत्त जी बहुत ही हताश हो गये थे। तब मुंशीराम ही थे जिन्होंने पं. गुरुदत्त के उत्तम प्रयासों की सराहना की तथा उन्हें ढाढस बंधाया तथा उनके सामने ही संकल्प लिया कि–'पण्डित जी! आपकी भावनायें व्यर्थ नहीं जायेंगी। और अभी नहीं तो शीघ्र

(शेष पृष्ठ 4 पर)

'आर्य-प्रेरण' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हवन क्यों करें, करें या न करें?

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हवन क्या है? हवन एक कर्मकाण्ड है जिसमें एक हवन कुण्ड, यज्ञ की समिधायें, एक पात्र में घृत, उसमें एक चम्मच या चमसा, आचमन के लिए जल व उनमें चम्मच, यजमानों व याज्ञिकों की संख्या के अनुसार प्लेटों में हवन सामग्री व याज्ञिकों के बैठने के लिए आसन आदि का प्रबन्ध किया जाता है। यज्ञ में हवन के मन्त्र बोले जाते हैं जिनकी भाषा वैदिक संस्कृत है। मन्त्रों को बोलने का प्रयोजन यह है कि इससे वेदों में निहित ईश्वरीय ज्ञान की रक्षा व इनके अर्थों को जानकर इनसे होने वाले लाभ विदित होते हैं व इनसे भी स्तुति-प्रार्थना-उपासना हो जाती है जो अन्यथा नहीं हो सकती। यह भी यहां स्पष्ट कर दें कि थोड़े से परिश्रम व कुछ बार आवृत्ति करने पर स्मरण हो जाते हैं। हमने देखा है कि जिन परिवारों में यज्ञ होता है वहां के छोटे-छोटे बच्चों, जिनकों ठीक से भाषा का ज्ञान नहीं होता, अपनी तोतली भाषा में ही मन्त्रोच्चार करते हैं तो वह दर्शक को बहुत प्रिय व अच्छा लगता है। जो व्यक्ति, बूढ़ा, युवक, विद्यार्थी व बच्चा, विश्व की श्रेष्ठतम् धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए इतना भी नहीं कर सकता, अपितु हवन का विरोध करता है, उससे क्या आशा या अपेक्षा की जा सकती है? वह उस ईश्वर के प्रति व देश समाज के प्रति कृतघ्न होता है, जिसने यह संसार बनाया व उसे जन्म व सुखों की नाना प्रकार की सामग्री से समृद्ध किया है।

हवन वह पद्धति है जिससे गृह व निवास स्थान की दूषित व रोगोत्पादक वायु को बाहर निकाला जाता है, बाहर की शुद्ध वायु! को घर में प्रवेश कराया जाता है, रोग न हों और यदि किसी सदस्य को है तो उसका निवारण या उपचार होता है। इसके अतिरिक्त वैद्य या डॉक्टर के परामर्श से ओषधि का सेवन भी अवश्य करना चाहिये। हवन अपना कार्य करेगा और बचा हुआ कार्य ओषधि के सेवन से होगा। यज्ञ में जो पदार्थ आहुत किये जाते हैं, वह अग्नि से सूक्ष्म हो जाते हैं। वह सारे घर में फैल जाते हैं। सूक्ष्म पदार्थों का हमारे स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव पड़ता है। हानिकारक रोग उत्पन्न करने वाले वायु में विद्यमान कीटाणुओं व बैक्टिरियाओं का नाश होता है।

गीता के अनुसार यज्ञ करने से बादल बनते हैं, बादल से वर्षा होती है, उस वर्षा के जल में हवन में होम किये गये पदार्थ सूक्ष्म होने के कारण घुले-मिले होते हैं, हवन में आहुत सूक्ष्म पदार्थों व वर्षा के जल से हमारे खेतों में यह जल उत्तम खाद का काम करता है। पुरूष व प्राणी इस प्रकार यज्ञों से प्रभावित उत्पन्न हुए अन्न का भक्षण करते हैं, तो इस अन्न से शरीर की विभिन्न इन्द्रियां व सभी अंग स्वस्थ व बलवान होकर पौरूष शक्ति उन्नत होती है। ऐसे स्त्री-पुरूषों से जो सन्तानें उत्पन्न होतीं हैं, वह श्रेष्ठ होती हैं। हवन में वेद मन्त्र का बोलना आवश्यक है। पूर्ण वर्णित लाभ से अतिरिक्त इसका अन्य लाभ यह है कि बोले जाने वाले मन्त्रों के अर्थों को जानकर यज्ञ में रूचि व प्रवृत्ति बढ़ती है। आजकल यज्ञों में बोले जाने सभी मन्त्र व उनके अर्थ लघु पुस्तिकाओं में उपलब्ध हो जाते हैं। थोड़ा सा प्रयास मात्र करना है। इससे सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त व सृष्टि इतिहास में सर्वश्रेष्ठ वैदिक ज्ञान व विचारों वाले इन वेद मन्त्रों की रक्षा होती है जो कि मनुष्यमात्र का प्रथम कर्तव्य है। इसका कारण संसार में ज्ञान से बढ़कर कुछ नहीं है तथा यह मन्त्र श्रेष्ठ व अपौरूषेय ज्ञान का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जिनकी रक्षा आवश्यक है।

यहां ध्यान देने योग्य बात है कि सृष्टि व वेद की उत्पत्ति को 1,96,08,53,122 वर्ष हो चुके हैं। हमारे पूर्वजों ने प्राणपण से वेदों की इतनी लम्बी अवधि तक रक्षा की है। यह संसार के इतिहास में अपूर्व व आश्चर्यजनक है। हम तो इसे संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य कहेंगे। आज वेदों की रक्षा करना पहले से आसान हैं। पुस्तकों द्वारा, सीडी/वीसीडी आदि के द्वारा मन्त्रों को बोल कर व स्मरण कर इनकी रक्षा होती है। जो लोग वेदों के सन्ध्या व हवन के मन्त्रों को बोलना अनावश्यक समझते हैं उनसे हम यह कहना चाहते हैं कि जब छोटे-छोटे कार्यों में गृहस्थी अपना लम्बा समय व बड़ी धनराशि व्यय कर सकते हैं तो ईश्वर, जिसने हमारे लिए सृष्टि बनाई, हमें यह मानव शरीर दिया व हमारे माता-पिता, पुत्र व पुत्रियां आदि सम्बन्धी हमें दिये तो क्या उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करने के लिए सन्ध्या व हवन नहीं करना चाहिये? हम समझते हैं कि सभी बुद्धिमान पाठक कहेगें कि अवश्य करना चाहिये। अत: जो बन्धु न करते हों उनसे हमारा अनुरोध है कि आज से ही हवन करना आरम्भ कर दें और इसके दृश्य व अदृश्य लाभों से वंचित न हों।

अब से होने वाले लाभ की कुछ चर्चा और कर लेते हैं। सन्ध्या से तो ईश्वर से निकटता होती है। इससे बुरे गुण-कर्म-स्वभाव का छूटना व श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव का बनना होता है। याज्ञिक परिवार के लोगों का स्वास्थय अच्छा होना व दीर्घायु होने से अनेकानेक लाभ होते हैं। ईश्वर ने यज्ञ करने वालों का देवता कहा है। हम यज्ञ करते हैं तो हम ईश्वर की दृष्टि में देवता होते हैं। यह पृथिवी देवों द्वारा यजन किये जाने से ईश्वर इसके लिए वेदमन्त्र में ''देवयजनि'' शब्द का प्रयोग करते हैं। यदि व्यक्ति यज्ञ नहीं करता तो वह ईश्वर के नियमों को तोड़कर अपराधी होने से ईश्वर द्वारा उसे मनुष्य जन्म दिये जाने को असफल सिद्ध करता है व दण्ड का भागी होता है। इसे इस प्रकार से समझ लें कि कोई व्यक्ति सरकारी या निजी क्षेत्र में नौकरी करता है। वहां उसे 10 बजे आने के लिए कहा जाये और वह देर से पहुंचे या न पहुंचे तो वह दण्ड स्वरूप नौकरी से निकाल दिया जाता है, इसी प्रकार से यज्ञ की ईश्वराज्ञा वा वेदाज्ञा का उल्लंघन करने या न मानने से वह ईश्वरीय दण्ड का भागी हो जाता है।

हमने निष्पक्ष भाव से मनुष्य-देश-समाज के हित को सामने रखकर संक्षेप में यज्ञ व हवन के विषय में लिखा है। आशा है कि पाठक इन पर विचार करगें और इन्हें सत्य पायेंगे। हम उनसे अपेक्षा करते हैं कि वह भी सन्ध्या व हवन को अपनायेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करेंगे और ऐसा करके पुण्य के भागी बनें। हम यह भी कहना चाहेंगे यदि किसी यज्ञ प्रेमी के पास यज्ञ करने के लिए घृत, सामग्री, स्थान आदि की समस्या हो तो वह यज्ञ को छोड़े नहीं, अपितु! अपने मन्त्रों को बोल या मन से उनका पाठ कर हवन को सम्पन्न करें। हम समझते हैं कि यदि दैनिक यज्ञ में स्वस्तिवाचन व शान्तिकरण को भी सम्मिलित कर सकें तो इससे अधिक लाभ होने की सम्भावना है।

- 196 चपुक्खूवाला-2,
देहरादून-248001, फोन: 09412985121

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

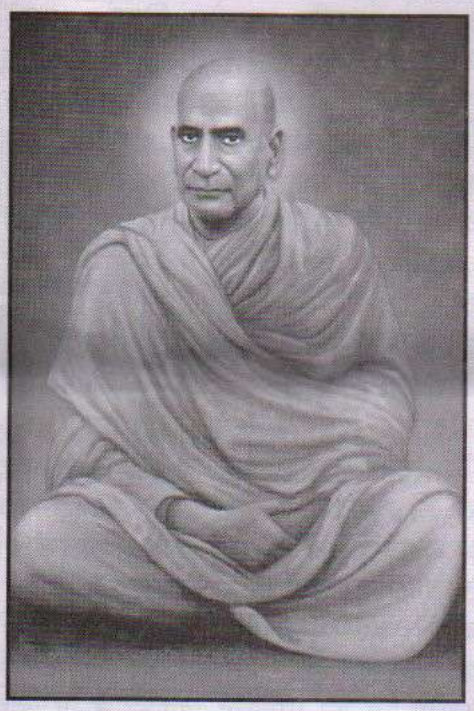

युगनिर्माता महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा में स्वामी श्रद्धानन्द जी का अप्रतिम स्थान है। धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधार के कार्यों को विस्तार देने में उनका योगदान कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। अपने युग के आर्यसमाज के वह कर्णधार थे। सामाजिक समरसता, दलितोद्धार, राष्ट्रीय भावना के विकासक स्वराज्य की प्राप्ति के लिए उनका संघर्ष, सब कुछ कृतज्ञ राष्ट्र के लिए उनकी अद्भुत अविस्मरणीय देन है। चिरकाल से उपेक्षित गुरुकुल शिक्षा पद्धति की पुनः प्रतिष्ठा उनका ऐसा महान् कार्य है, जो भारतीय इतिहास में सदैव स्थायी रूप में अंकित रहेगा। उनका जन्म सन् 1856 में जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में नानकचन्द जी के यहाँ हुआ था। पिता नानकचन्द के पुलिस सर्विस में होने के कारण मुंशीराम (श्रद्धानन्द जी) की शिक्षा-दीक्षा वाराणसी के सरकारी स्कूल तथा इलाहाबाद के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज में हुई। सम्पन्नता तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण मुंशीराम जी की रुचि भौतिकतावादी थी। काशी और प्रयाग में हिन्दू धर्म की जिन विकृतियों से उनका परिचय हुआ उससे वे धर्म के प्रति अपनी आस्था खो बैठे। किन्तु बरेली में जब उनका सम्पर्क महर्षि दयानन्द के साथ हुआ तब धर्म से सम्बन्धित उनकी भौतिकवादी, पाश्चात्य संस्कृति से जुड़ी समस्त धारणायें परिवर्तित हो गयीं। महर्षि के उपदेशों का उन पर जो प्रभाव पड़ा उसने जीवन की दिशा ही बदल दी। ऋषि दयानन्द के व्याख्यानों का जो असर उन पर हुआ उसे मुंशी राम जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है। ''मैने बड़े-बड़े वक्ताओं के व्याख्यान सुने हैं, परन्तु जो ओज महर्षि की वाणी में था, वह अन्यत्र कहीं नहीं पाया। उनके भाषण से श्रोताओं को जो प्रकाश मिलता था, वैसा प्रकाश किसी अन्य वक्ता की वाणी से नहीं मिला।'' महर्षि के व्याख्यान से और उनके सम्पर्क से मुंशीराम की प्रसुप्त जागृत हो उठी। उनकी अश्रद्धा-अनास्था गहन श्रद्धा में रूपान्तरित हो उठी। महर्षि के मन्तव्यों को पूर्ण करने के लिए उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। अप्रैल 1917 में संन्यास आश्रम में प्रवेश के पश्चात् उन्होंने देश के सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में जो काम किए उससे उनकी गिनती देश के मूर्धन्य नेताओं में की जाने लगी थी।

उनके विषय में मि. रामजे मैकडानाल्ड ने लिखा था-''वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई मॉडल चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति के लिए इशारा करुँगा। यदि कोई चित्रकार मध्यकाल के सेन्ट पीटर के चित्र के लिए मॉडल मांगेगा, तो मैं उसे जीवित भव्य मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूँगा।''

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की इस घड़ी में उनके अनुयायी आर्यसमाज के अधूरे कार्य विशेष रूप में शुद्धि के कार्यक्रम को आगे बढ़ाये यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वामी श्रद्धानन्द प्यारा है

❑ सत्यपाल पथिक

स्वामी दयानन्द प्यारा है।
तन मन धन जिसने इस देश पै वारा है।।
इक नई परभात हुई।
महर्षि दयानन्द से
जिस दिन मुलाकात हुई।।
अन्धकार का नाश हुआ।
मिट गये भ्रम सारे,
चारों ओर प्रकाश हुआ।।
दूषित पथ छोड़ दिया।
बिगड़ते जीवन को इतना बड़ा मोड़ दिया।।
धन माल सभी अपना।
आर्यसमाज को दिया,
साकार किया सपना।।
ऋषिवर के दीवाने ने।
गुरुकुल खोल दिया, बनके मस्ताने ने।।
अंग्रेज ने मान लिया।
सामने संगीनों के जब सीना तान दिया।।
हर दिल लहराया था।
जिस वक्त शुद्धि को
तूने बिगुल बजाया था।।
दुश्मन बेईमान हुआ।
स्वामी श्रद्धानन्द का था
अमर बलिदान हुआ।
वह काम किया उसने
जाति गिरती को, फिर थाम लिया उसने।।

निःशुल्क व्यवस्था

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली की ओर से आर्ष परम्परा गुरुकुल से पढ़े छात्र जो दिल्ली में रहकर बी.ए., एम.ए., बी.एड. करना चाहते है। उनके लिए निःशुल्क निवास, भोजन, छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। इच्छुक मेधावी छात्र सम्पर्क करें।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, सम्पर्क-
011-40229761

(पृष्ठ 1 का शेष)

ही आपके प्रयासों को मूर्तरूप मिलेगा।' पं0 गुरुदत्त तो इन्हें अपना बड़ा भाई ही मानते थे। उन्हें तो अपने जीवन में अपनी योजना को फलीभूत होते देखने का अवसर नहीं मिला; किन्तु अधिवक्ता मुंशीराम के मन में स्वामी जी के जीवन में आरम्भ किये कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने की ज्योति सदैव जलती रही।

अपनी अगली पीढ़ी अर्थात् सन्तानों को कैसे संस्कार देने चाहिये – ये भी मुंशीराम के जीवन से हमें सीखना चाहिये। उन्होंने अंग्रेजी सभ्यता व संस्कृति के प्रतिवाद में शिक्षा के रूप में ही गुरुकुलों की स्थापना का लक्ष्य बनाया, अपनी चारों सन्तानों को उन्हीं में शिक्षित किया, जो बाद में आदर्श सन्तान सिद्ध हुईं। यहाँ तक कि गुरुकुल खोलने के लिए पहले संकल्प लिया कि जब तक मैं 30 सहस्र रुपये इकट्ठा नहीं कर लूँगा, तब तक चौन से नहीं बैठूंगा। लगभग एक माह में ही उन्हें यह राशि प्राप्त हो गई। यह उन पर ईश–कृपा का ही परिणाम था कि मनुष्य की यदि भावनायें पवित्र तथा यज्ञमय हों, तो प्रभु अवश्य अपनी कृपा करते हैं। कांगड़ी नामक ग्राम की भूमि, जो बीहड़ वन के रूप में थी तथा जहाँ जंगली जानवर यदा–कदा आ जाते थे, उसके स्वामी ने दान में प्राप्त कर, उसकी सफाई करा कर, 1902 ईसवी में वहाँ गुरुकुल की स्थापना की, जो गुरुकुल कांगड़ी नाम से प्रसिद्ध हुआ। अपने दोनों पुत्रों को सबसे पहले उसमें प्रवेश दिलाया तथा समाज में एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। पूरे समाज को जागृत करने के लिए आपने 'सद्धर्म प्रचारक' नाम से एक समाचार–पत्र उर्दू लिपि में चलाया, जिसे बाद में आर्यभाषा (हिन्दी) में भी छपवाया। इसके साथ–साथ अपने काम में चार बड़े गुरुकुलों की स्थापना भी की।

स्वामी दयानन्द के सानिध्य में रहकर समाज– राष्ट्र व देशप्रेम में ओत–प्रोत होकर संन्यास लिया व राजनीति में प्रवेश कर, अंग्रेजी सत्ता से खूब टक्कर ली और उन्हें मात दी। मुस्लिम जगत् को भी मानवता का पाठ पढ़ाया तथा स्वामी जी के शुद्धि कार्यक्रम को आन्दोलन का रूप देकर 13 फरवरी सन् 1923 को अग्र नगर (आगरा) में शुद्धि–सभा की स्थापना की। आपके प्रयत्नों को देखकर तत्कालीन राष्ट्रीय नेता पं. मदनमोहन मालवीय जी ने आपको अत्यन्त सहयोग किया। आपने उनके सहयोग का स्वागत–सत्कार करते हुए अपने शुद्धि कार्यक्रम में उनकी अनेक प्रकार से सराहना की। 1923 में सभा की स्थापना से अछूतोद्धार कार्यक्रम आरम्भ कर, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लाखों दलितों को वैदिक (हिन्दू) धर्म में मिलाया, तथा दलितोद्धार–सभा की स्थापना की। स्वामी जी के इन समाज–सुधार के कार्यक्रम को देखकर ये भारत में सत्तारुढ़ अंग्रेजों की आँखों में खटकने लगे थे। अंग्रेजों द्वारा पैदा किया कांग्रेल दल, जो अपने अस्तित्व से ही देश में अंग्रेजी सत्ता को हमेशा बरकरार रखने के उद्देश्य से भारत में 'फूट डालो, राज करो' के लक्ष्य को आगे बढ़ाते हुए मुसलमानों को उकसाया। फलस्वरूप एक मतान्ध मुसलमान ने स्वामी जी की गोलियां मारकर हत्या कर दी। इसी कांग्रेस के नेता गान्धी ने मुसलमान हत्यारे को अपना भाई कहा।

भर्तृहरि वचन

1. धन की तीन गतियां होती है। दान, भोग और नाश। जो मनुष्य न धन का दान करता है और न भोग करता है, उस का धन नाश को प्राप्त हो जाता है।
2. दुर्जन व्यक्ति चाहे कितना ही विद्वान हो उसे उसी प्रकार त्याग देना चाहिए जैसे मणिधारी विषधर को त्याग दिया जाता है।
3. व्यक्ति की तृष्णा कभी नहीं मरती। तृष्णा को त्याग कर संतोष प्राप्त करें। संतोष के अतिरिक्त सुख-शान्ति का दूसरा कोई मार्ग नहीं है।
4. भोगों को हमने नहीं भोगा, बल्कि भोगों ने ही हमें भोग लिया। तृष्णा बूढ़ी नहीं हुई, हम ही बूढ़े हो गय।
5. आशा एक नदी है, इसमें इच्छायें रूपी जल भरा है और तृष्णा रूपी लहरें उठा करती हैं। आशा में ही व्यक्ति जीवन भर फंसा रहता है।
6. दूसरों का चिन्तन करने की बजाय मनुष्य को आत्मचिन्तन में लगना चाहिए। आत्मचिन्तन से विवेक की प्राप्ति होगी।
7. मोह भय उत्पन्न करता है। मोह से मुक्त वही हो सकता है जिसने वैराग्य धारण कर लिया हो।
8. जब तक मनुष्य को आत्मज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक ही वह सांसारिक भोगों में लीन रहता है। ब्रह्मज्ञान होता है तो वह सांसारिक सुखों से मुंह मोड़ लेता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के प्रयास करने चाहिए।
9. संसार में आकर व्यकित कुछ करे या न करे उसे मोक्ष प्राप्ति का प्रयास अवश्य करना चाहिए।
10. मन की गति विचित्र है, वह पल में कहीं होता है और पल में कही। किन्तु इतना मूर्ख है कि आत्मा में वसे परमात्मा का स्मरण नहीं करता जिसकी अनुकम्पा से सहज ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।
11. सुख तो क्षण भंगुर हैं। परमात्मा के सिवाय कुछ भी नित्य नहीं है। अगर मनुष्य को संसार रूपी भवसागर से पार उतरना है तो उसे परमात्मा के ध्यान में लीन हो जाना चाहिए।
12. नाना प्रकार के सांसारिक भोग नाशवान हैं, इन्हीं के कारण आवागमन का चक्र चलता रहता है। आशा, कामना आदि का त्याग कर मन को परमेश्वर में लगाओ।

MESSAGE OF GITA

❑ Dr. Mahesh Vidyalankar

Cotinue from last issue

Gita`s proposition is that a man should desire and collect to the extent as is necessary to fulfil his necessities, and discharge responsibilities of life in a simple manner without being forced to seek other`s help. Money earned through dubious means leads the man to his downfall, brings him diseases and increases his lust and desires. Money earned righteously gives a man peace, contentment and prosperity. Wealth has three states: donation, consumption and waste. The best use of money is utilizing it is service, good to others and cooperation. This brings divinity to the man. God loves such people. Money given in donation brings us contentment, happiness and peace. The second condition of money is its consumption. There is no limit to worldly consumption. However, there is a limit to the man`s capacity to consume. After all, how much does he need? Things to be consumed and enjoyed are innumerable. The man leaves the world, but the things of world use remain behind in the world. Greed for enjoyables goes on increasing. Science and technology together with market economy have created and made available a variety of consumable objects that the man has gone mad after them, thus making his own life miserable. The valuable human life is finished in the worldly pursuits. Knowledge of Gita guides you that is you want to be happy, content and calm, do not look at the things themselves: rather how much of them you actually need. You will be saved from confusions, problems and agonies.

The Third condition of money is waste. The money, neither donated nor consumed, goes down the drain. The greedy man suffers a fall from grace within himself. Such a man does not deserve to be a devotee of God. Temptation and greed defile the man`s intellect. The qualities of heart, as truth, knowledge, discretion, righteousness, morality lose their vigour. On account of greed and lust, he himself is disturbed, insatiated, unquiet and sad and also puts others in the same condition. The miserly person lives a life of misery throughout and leaves this world stricken with diseases and regrets over his actions in life. Neither he lives in peace nor lets other live in peace. Greed is a serious malady which turns a man into an animal and leaves him battered and shattered.

According to Gita, contentment is the unfailing treatment of greed. To feel content by whatever is acquired by one`s own efforts and purposeful acts is contentment. A thoughtful, contemplating and discriminating person, thinks that God has granted him in proportion to his hard work. He is thankful to God for his gains. His thinking is that he had brought nothing with him when he was born, and therefore whatever is given to him is his profit in the deal. Thanks to God for this. It is the dissatisfied man who always complains. The contented person expresses gratitude and thanks to God. The discerning person knows that whatever be the size of his accumulated wealth and money and means of worldly enjoyment, he will have to leave all that at the time of final departure. Therefore. it is no use being greedy for more and more. He prays God to grant him that much as required and seeks his grace for a contented life. The man conquers greed and is content, happy and calm. He keeps his desires and necessities to the minimum, has won over his mind, is trustful and devotee of God, earns and spends with sincerity and honesty and doest not long for the path of victory. Here lies glory of Gita.

JNANA YOGA: PATH OF KNOWLEDGE

Gita is a storehouse of the glory of jnana yoga (acquiring spiritual knowledge). Knowledge is like eyes. As the human life is incomplete and dark without eyes, so are the human life the world full of sorrow and unrest without the knowledge of truth Gita teaches us:

धन्य है बलिदान

धन्य है बलिदान श्रद्धानन्द का,
धन्य जीवनदान श्रद्धानन्द का।।
आर्य नर-नारी सभी मिलकर करें,
आज गौरव गान श्रद्धानन्द का।
बोल भारत की धरा जयकार तू,
शूरता की शान श्रद्धानन्द का।।
दे दिया सर्वस्व अपने देश को,
काम था निष्काम श्रद्धानन्द का।
देश के स्वाधीनता संघर्ष में,
नाम है संग्राम श्रद्धानन्द का।।
प्रेम श्रद्धा से मनायें पर्व हम,
पीड़ितों के त्राण श्रद्धानन्द का।
शीश जिज्ञासु झुकाते हैं, जिसे
है हमें अभिमान श्रद्धानन्द का।।

ओ३म

श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल'

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' बड़े होनहार नौजवान थे। गजब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुन्दर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा होते तो सेनाध्यक्ष बनते। आपको पूरे षड्यन्त्र का नेता माना गया है। चाहे बहुत ज्यादा पढ़े हुए नहीं थे, लेकिन फिर भी पण्डित जगतनारायण जैसे सरकारी वकील की सुध-बुध भुला देते थे। चीफ कोर्ट में अपनी अपील खुद ही लिखी थी, जिससे कि जजों को कहना पड़ा कि इसे लिखने में जरूर ही किसी बहुत बुद्धिमान व योग्य व्यक्ति का हाथ है।

19 तारीख की शाम को आपको फांसी दी गयी। 12 की शाम को जब आपको दूध दिया गया तो आपने यह कहकर इंकार कर दिया कि जब मैं मां से मिलूंगा तब ही दूध ही पीऊंगा। 17 को आपकी मुलाकात हुई। मां को मिलते समय आपकी मुलाकात हुई। मां को मिलते समय आपकी आंखों से आशु बह चले। मां बहुत हिम्मत वाली देवी थी। आपसे कहने लगी-हरीशचन्द्र, दधीचि आदि बुजुर्गो की तरह वीरता, धर्म व देश के लिए जान दे, चिन्ता करने और पछताने की जरूरत नहीं। आप हंस पड़े। कहा, 'मां! मुझे क्या चिन्ता और क्या पछतावा, मैंने कोई पाप नहीं किया। मैं मौत से नहीं डरता। लेकिन मां। आग के पास रखा घी पिघल ही जाता है। तेरा-मेरा सम्बन्ध ही कुछ ऐसा है कि पास होते ही आंखों में आंसु उमड़ पड़े। नहीं तो मैं बहुत खुश हूँ। फांसी पर ले जाते समय आपने बड़े जोर से कहा, 'वन्दे मातरम्' 'भारत माता की जय' और शान्ति से चलते हुए कहा-'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे बाकी न मैं न रहूं, न मेरी आरजू रहे। जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे, तेरा ही जिक्रे यार, तेरी जुस्तजू रहे।

फांसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने कहा- मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूं। फिर यह शेर पढ़ा- 'अब न अहले वलवले है, और न अरमानों की भीड़। एक मिट जाने की हसरत, अब दिले-बिस्मित में है।

फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर एक मन्त्र पढ़ना शुरु किया। रस्सी खींची गयी। रामप्रसाद जी फांसी पर लटक गयें आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम ख्याल यह है कि उसका कसूर यही था कि वह इस गुलाम देश में जन्म लेकर भी एक बड़ा भारी बोझ बन गया था और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था। आपको मैनपुरी षड्यन्त्र के नेता श्री गेंदालाल दीक्षित-जैसे शूरवीर ने विशेष तौर पर शिक्षा देकर तैयार किया था। मैनपुरी के मुकदमे के समय आप भागकर नेपाल चले गये थे। अब वही शिक्षा आपकी मृत्यु का एक बड़ा कारण हो गयी। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भारी जुलूस निकला। स्वदेश-प्रेम में आपकी माता ने कहा-

''मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूँ, दु:खी नहीं। मैं श्री रामचन्द्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बोलो श्री रामचन्द्र की जय।''

इस-फुलेल और फूलों की वर्षा के बीच उनकी लाश का जुलूस जा रहा था। दुकानदारों ने उनके ऊपर से पैसे फेंके। 11 बजे आपकी लाश शमशान भूमि में पहुंची और अन्तिम क्रिया समाप्त हुई।

आपके पत्र का आखिरी हिस्सा आपकी सेवा में प्रस्तुत है-

''मैं खूब सुखी हूं। 19 तारीख को प्रात: जो होना है उसके लिए तैयार हूँ। परमात्मा काफी शक्ति देंगे। मेरा विश्वास है कि मैं लोगों की सेवा के लिए फिर जल्द ही जन्म लूंगा। सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पण्डित जगत्नारायण (सरकारी वकील जिसने इन्हें फांसी लगवाने के लिए बहुत जोर लगाया था) को अन्तिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथपथ रूपयों से चैन की नींद आये। बुढ़ापे में ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।''

रामप्रसाद जी की सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गयीं। फांसी से दो दिन पहले से सी.आई.डी. के मि. हैमिल्टन आप लोगों की मिन्नतें कहते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बातें बता दो, आपको पांच हजार रूपया नकद दे दिया जायेगा और सरकारी खर्चे पर विलायत भेजन बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जायेगी। लेकिन आप कब इन बातों की परवाह करते थे। आप हकूमतों को ठुकराने वाले व कभी-कभार जन्म लेने वाले वीरों में से थे। मुकदमे के दिनों आपसे जज ने पूछा था, ''आपके पास कया डिग्री है?'' तो आपने हंसकर जवाब दिया था, ''सम्राट् बनाने वालों को डिग्री की कोई जरूरत नहीं होती, क्लाइव के पास भी कोई डिग्री नहीं थी।'' आज वह हमारे बीच नहीं नहीं। आह!!

अपना सहयोग प्रदान करें।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना सहयोग प्रदान करते रहें। आप अपना सहयोग क्रॉस चैक द्वारा आर्य समाज राजेन्द्र नगर के नाम से कार्यालय: आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के पत्ते पर भिजवाये अथवा सीधा ऑनलाइन भी जमा कर सकते हैं। खाता संख्या-3075000100082363, IFSC-PUNB307500, पंजाब नेशनल बैंक। **-अशोक सहगल (प्रधान)**

स्वामी दयाननद जी की 200वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में 11 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन

मंचस्थ विद्यमान विद्वत मण्डल

यज्ञ करते हुए आर्यजन

आर्यनेता, शिक्षाविद्, ऋषिभक्त, दानवीर श्री अशोक सहगल जी द्वारा 5 नवम्बर 2023 को सिंधी पार्क, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में 11 कुण्डीय महायज्ञ किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा **आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी** ने कहा कि हमारे वेदों में पाँचों महायज्ञ की महिमा गायी गई है। अपने माता-पिता का हमें सम्मान करना चाहिए। **आचार्य भगवान देव जी** ने इस अवसर पर सहगल परिवार को बधाई दी। **आचार्य हरेन्द्र शास्त्री जी** ने कहा कि सहगल परिवार निरन्तर 28 वर्षों से इस कार्य को कर रहे हैं। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् **डॉ. महेश विद्यालंकार जी** ने अपने सम्बोधन में गायत्री मन्त्र की महिमा पर प्रकाश डाला और परिवर में सुख शान्ति कैसे हो इस पर विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम संयोजक **सुरेश सुघ** जी व **अतुल सहगल** जी ने सभी का धन्यवाद किया। परिवार की ओर से प्रसाद का वितरण किया गया। **-साक्षी बहल** (कार्यकारिणी प्रधाना आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली)

सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा का अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा का अधिवेशन सोमवार दिनांक 11 दिसंबर 2023 को श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली में समय 11.00 से 1.00 बजे तक आयोजित किया जाएगा। इसके उपरांत 3.00 बजे से 5 बजे तक आर्य पुरोहित सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

– संयोजक आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी एवम् नरेन्द्र शास्त्री जी।

R.N.I.No. DEL BIL/2007/22120
Date of Publication 20-11-2023

Postal R.No. DL(C)-14/1431/2021-23
Posted at SRT Nagar PO, New Delhi-55
Posting Date: 7-8 Every Month

आर्य प्रेरणा

दिसम्बर-2023

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के संस्थापक
द्वारकानाथ सहगल जी की पुण्यस्मृति पर
शत्-शत् नमन

आज भी आंखों में नमी है
हर तरफ सिर्फ आपकी कमी है
आप से बढ़कर कुछ नहीं था
दुनिया में और
आपकी जगह कोई नहीं है।

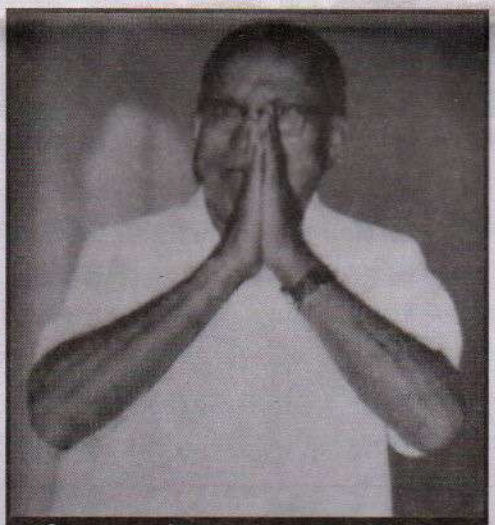

हमारे पथ प्रदर्शक स्व. द्वारकानाथ जी सहगल
जन्म 07.09.1911, निर्वाण 05.12.1988

आर्य समाज के कर्मशील सिपाही और राजेन्द्र नगर समाज के संस्थापक द्वारकानाथ सहगल जी की पुण्यस्मृति (दिनांक 05.12.1988) पर हमें उन्हें शत-शत नमन करते है। उनके लगाये इस समाज पौधे में आज समाज वैदिक मिशन के अनेक कार्यों को अपने हाथ में लेकर कर रहा है और समाज के उत्थान में योगदान कर रहा है।

महर्षि का सन्देश ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' को पूरा करने में यथा सम्भव समाज प्रयासरत है। सज्जन सत्पुरुषों का किये गए कार्य ही उनका नाम, यश, कीर्ति को जीवित रखती है। आज उनका हमारे बीच पञ्चभौतिक शरीर उपस्थित नहीं है पर उनके कार्य और विचार हमारे प्रेरणा के स्त्रोत है।

उन्होंने समाज को हमेशा ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सूत्रों में जोड़ने का कार्य सराहनीय है। यह समाज आज समाज में नये चेतना और अच्छे कार्य के प्रति अभि प्रेरित है। उनका जीवन हमें ''परोपकाराय संता विभूतय:''। इस नीति वाक्य के अक्षरश: पालक तप:पूत आधार सौम्यमूर्ति श्री स्व. द्वारकानाथ सहगल जी को हम सब नमन करते है।

पंडित मदन मोहन मालवीय

पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को इलाहाबाद में हुआ था। इनके पिता का नाम पण्डित ब्रजनाथ और माता का नाम श्रीमती भूनादेवी था। मालवीय जी ने भी संस्कृत का प्रारंभिक प्रशिक्षण लिया था। बाद में वे अंग्रेजी पढ़ने के लिए एक विद्यालय से जुड़ गए। वे एक महान् सामाजिक कार्यकर्ता थे। भारत में स्काउटिंग कार्यक्रम के संस्थापकों में से वे एक थे। उन्होंने सत्यमेव जयते का नारा दिया। उन्होंने हरिद्वार में हर की पौड़ी में आरती की परंपरा शुरू की। उनके नाम पर अनेक स्थान हैं। स्वभाव से शालीन, विनम्र, उदारचित्त और सादा जीवन व्यतीत करने वाले मालवीय जी की पहचान एक सफल शिक्षाविद, पत्रकार, सम्पादक, समाज-सुधारक, वकील और एक कुशल वक्ता की भी है। मालवीय जी को सम्मानित करने के उद्देश्य से हाल ही में भारत सरकार ने 25 दिसम्बर, 2014 को उनके 153वे जन्मदिन पर भारत रत्न से नवाजा गया। राष्ट्र इस महान नेता को हमेशा याद रखेगा।

संसार में उस मनुष्य का सत्कार होता है, जो विद्वानों के उत्तम वचनों को सुनकर सत्य और असत्य का ठीकठीक निर्णय कर असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करके यशस्वी होकर पुण्य को प्राप्त होता है। - **स्वामी दयानन्द**

Printed and published by Mr. Narinder Mohan Walecha secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Mayank Printers, 2199/63, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. Editor: Aacharya Gavendra Shastri